# प्रतिष्ठित आत्मा

**प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़,**

**पूर्व कुलपति, सिंघानिया विश्वविद्यालय, राजस्थान**

यह संसार जड़तत्व और चेतनतत्व दो तत्वों से मिलकर बना हुआ है। जड़तत्व भौतिकतत्व है और आत्मतत्व आध्यात्मिक तत्व है। मानव जीवनभर पंचेन्द्रियों से जड़तत्वों का ही दर्शन करता है और उसी के साथ संबंध स्थापित किये रहता है। उसके नष्ट होने पर उसे दुःख होता है। जब उसकी वृत्ति ऊर्ध्वमुखी होती है, तब वह आत्मतत्व की ओर गति करता है। आत्मतत्व अविनाशी तत्व है और भौतिक तत्व विनाशशील है। पंचेन्द्रिय का सम्पर्क भौतिकतत्व से ही होता है। आंख रूप का दर्शन करती है, कान शब्द का, जिह्वा स्वाद का, नासिका गंध का और त्वचा स्पर्श का स्वाद लेती है। अनुकूल और प्रतिकूल ज्ञान होने पर सुख और दुःख की अनुभूति होती है। ये सब ज्ञान बाह्य जगत् के हैं। इससे भिन्न आत्मतत्व है, जो कि यथार्थ ज्ञान है। जब मनुष्य को सम्यक् दर्शन, सम्यक् ज्ञान और सम्यक् चारित्र का ज्ञान हो जाता है तो उसका ज्ञान पुष्ट हो जाता है।

आत्मा के साथ कर्म शरीर या लिंग शरीर जुड़ा रहता है। जन्मजन्मांतर से हम जैसा कर्म किये रहते हैं, वहीं राग–द्वेष प्रतिष्ठित आत्मा है। प्रतिष्ठित आत्मा सबकुछ कराती है। इससे मन, बुद्धि और अहंकार होता है। वहीं जीवात्मा से परमात्मा बनता है। मूल आत्मा ज्ञाता–द्रष्टा है। यदि मन्दिर में मूर्ति की प्रतिष्ठा कर देते हैं तो उसकी प्रभु, ईश्वर मानकर पूजा करते हैं। किन्तु वही पत्थर जब खादान में रहता है तो वह एक साधारण पत्थर कहलाता है। पूर्वजन्म में यदि हमने किसी के साथ बैर भाव बांधे हैं, तो वह आत्मा के साथ प्रतिष्ठित होकर उत्पन्न होता है। आत्मा जैसे–जैसे पूर्वभव में प्रतिष्ठा की है, वह इस जन्म में उत्पन्न होकर प्रतिष्ठित आत्मा बनती है।

आत्मा की अनुभूति कैसे करें यह एक प्रश्न है? आत्मा की अनुभूति अनुभव जन्य है। श्रमण परम्परा में केवलज्ञान हो जाने के बाद जीव ईश्वर बन जाता है। आत्मा अपने मूल स्वरूप में

स्थिर हो जाती है। यह अवस्था परम आनन्द की अवस्था है। क्योंकि इस अवस्था में आत्मा पर कर्मों का आवरण नहीं रहता है। मोक्ष की अवस्था में तीनों प्रकार के दुःखों का विनाश हो जाता है। शारीरिक, मानसिक और भौतिक सभी दुःख दूर हो जाते हैं। दुःखों के दूर होने पर आत्मा का परमात्मा से मिलन हो जाता है। यह पूर्ण सुखमय अवस्था है, पूर्ण ज्ञान की अवस्था है। सभी प्राणियों का लक्ष्य इसी सुख को प्राप्त करने की होती है। इस अवस्था में पहुंच जाने के बाद जीव का पुनरागमन नहीं होता है और आत्मा स्वप्रतिष्ठित हो जाती है। इस स्थिति में जीव को सोऽहम्–सोऽहम् की अनुभूति होने लगती है। **सर्वं खलु इदं ब्रह्म** का अभास होने लगता है। जड़चेतन का भेद मिट जाता है। चेतना का सर्वत्र दर्शन होने लगता है। सम्पूर्ण संसार ज्ञानमय हो जाता है। अज्ञान का सर्वथा विनाश हो जाता है और प्राणी आत्ममय हो जाता है। कायिक वाचिक और मानसिक एकरूपता आ जाती है। जन्म और मृत्यु का चक्र सर्वथा के लिए छूट जाता है और अज्ञान का पूर्णरूप से विनाश हो जाता है।

भगवान बुद्ध, भगवान महावीर स्वामी सत्य की खोज में जगह–जगह भटके, घोर साधन की। किन्तु अंत में उन्होंने यह निश्चय किया कि सत्य बाहर नहीं अंदर है। इसलिए आंतरिक सत्य को प्राप्त किया– **अप्पणा सच्च मे सेज्जा मेत्ति भूयेसु कप्पए** अर्थात् सभी प्राणियों के साथ मैत्री भाव रखना और सबको समान देखना सबसे बड़ा सत्य है। इसे आत्म तुला का सिद्धांत कहते हैं। प्राणियों को सुख प्रिय है, इसलिए उसका वियोग नहीं करना चाहिए और दुःख अप्रिय है, इसलिए उसका संयोग नहीं करना चाहिए। इष्ट का वियोग और अनिष्ट का संयोग होने पर दुःख की अनुभूति होती है।

जो व्यक्ति अपने को या अपनी आत्मा को जानता है वह अन्य प्राणियों की हिंसा नहीं करता। जड़ और चेतन का यह अंतर ही वास्तविक सत्य का ज्ञान है। आत्मा अमूर्त है और भौतिक तत्व मूर्त। आत्मा और भौतिक तत्वों में भेद है। आत्मा भिन्न और शरीर भिन्न है। आत्मा सच्चिदानंद स्वरूप है। आत्मा के साथ कर्म का बंधन होने पर आत्मा पर कर्मों का आवरण पड़ जाता है। एक मेज पर रखी हुयी वस्तु को चादर से ढ़क दिया जाये तो वस्तु का स्वरूप आंखों से ओझल हो जाता है किन्तु इसका मतलब यह नहीं है कि मेज पर वस्तु ही नहीं है। जैसे ही चादर को हटाया जाता है। वस्तु का स्वरूप नेत्रगोचर होने लगता है। शरीर आवरण

है और आत्मा इसका सत्य जो प्राणी इस सत्य को जानता है, वह कभी नहीं मरता। कबीरदास महाज्ञानी थे। उन्होंने इस सत्य को पहचान लिया था। उनका कहना था कि आत्मा अजर–अमर है। वे कहते है–

**हम न मरब मरिहैं संसारा**
**हमको मिला जियावन हारा।**

अर्थात् हमें आत्मा का पूर्ण ज्ञान हो गया है। आत्मा कभी नहीं मरती। विनाश तो शरीर का होता है। यही पूर्ण सत्य है। मानव को मन में आने जाने वाले विचारों के साथ नहीं बल्कि आत्मा के साथ अपने को जोड़ना चाहिए। आत्मा के साथ जोड़ लेने पर राग–द्वेष का भाव समाप्त हो जाता है। आलोचना प्रतिक्रमण, प्रत्याख्यान के द्वारा राग–द्वेष क्षीण हो जाता है। प्रतिष्ठित आत्मा से मुक्त होकर आत्मा–परमात्मा बन जाता है।